प्लेटो के साम्यवाद सिद्धांत (Theory of Communism)

प्लेटो ने रिपब्लिक में न्याय हेतु केवल शिक्षा सिद्धांत का ही नहीं अपितु साम्यवाद के सिद्धांत (Theory of Communism) का भी प्रतिपादन किया हैं। उसकी यह धारणा है कि शिक्षा द्वारा नागरिक के चरित्र-निर्माण का जो वातावरण राज्य में निर्मित होता है उसे नवजीवन एवं नवीन शक्ति प्रदान करने का साम्यवाद पूरक साधन हैं। प्लेटो की आस्था है कि शिक्षा योजना द्वारा ज्ञानवान शासकों का निर्माण किया जायेगा। इन शासकों को कुटुंब तथा सम्पत्ति के प्रलोभनों से मुक्त रखने की आवश्यकता हैं: प्लेटो शासकों के लिए ऐसी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था प्रस्तुत करता है जिसमें शासकों की न तो सम्पत्ति ही होगी और न उनके निजी परिवार। प्लेटो इस व्यवस्था को 'सम्पत्ति का साम्यवाद तथा 'पत्नियों' का साम्यवाद कहता हैं।

साम्यवाद की व्यवस्था

साम्यवाद की इस नवीन सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को प्लेटो केवल दार्शनिक शासकों तथा सैनिकों पर ही लागू करता है। इस व्यवस्था का स्वरूप कैसा होगा, इस प्रश्न का स्पष्टीकरण यहाँ किया जाता है। प्लेटो के अनुसार साम्यवाद की व्यवस्था के अंतर्गत संरक्षक वर्ग अपने कुटुंब और निजी सम्पत्ति का परित्याग करेंगे जिससे कि राज्य संचालन के कार्य में उनके सम्मुख कुटुंब और सम्पत्ति से पैदा होने वाले मोह उन्हें पथ-भ्रष्ट न कर सकें। जिस तरह शिक्षा का अंतिम लक्ष्य व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति हैं, उसी प्रकार साम्यवाद का ध्येय भी शासकों की आध्यात्मिक उन्नति करना ही हैं। प्लेटो शिक्षा और साम्यवाद को न्याय की प्राप्ति के दो अभिन्न साधन मानता हैं: शिक्षा न्याय की स्थापना का सकारात्मक आध्यात्मिक साधन हैं। साम्यवाद उसका एक नकारात्मक भौतिक साधन हैं। प्लेटो मानता हैं कि शासक की कर्त्तव्यपरायणता के मार्ग में कुटुंब और सम्पत्ति जैसी संस्थाओं की बाधाएँ आती हैं। साम्यवाद की व्यवस्था इन बाधाओं से दूर करती हैं। यह शासकों के आध्यात्मिक उत्थान का भौतिक साधन हैं। प्लेटो की मान्यता है कि जब शासक का प्रलोभन देने वाले कुटुंब और निजी सम्पत्ति जैसे कारण ही नहीं रहेंगे तब शासकों के नैतिक उत्थान की संभावनाएँ अधिक हो जायेगी। वास्तव में प्लेटो के साम्यवाद का सिद्धांत उसकी न्याय की धारणा का आवश्यक परिणाम हैं। यदि राज्य की एकता और व्यक्ति के नैतिक उत्थान के लिए न्याय आवश्यक हैं तो न्याय के लिए साम्यवाद भी उतना ही अपरिहार्य हैं जितनी आवश्यक शिक्षा हैं।